आचार्य अमृतचन्द्रसूरि

जीवन-परिचय : आध्यात्मिक विद्वानों में आचार्य कुन्दकुन्द के पश्चात् आदरपूर्वक जिनका नाम लिया जाता है, वे आचार्य अमृतचन्द्रसूरि हैं, क्योंकि आचार्य कुन्दकुन्द के कंचन को कुन्दन बनानेवाले आचार्य अमृतचन्द्रसूरि ही हैं, जिन्होंने एक हजार वर्ष बाद आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रन्थों पर टीकाएँ लिखकर उनकी गरिमा को जगत के सामने रखा।

आचार्य अमृतचन्द्रसूरि परम आध्यात्मिक सन्त, गहन तात्त्विक चिन्तक, रससिद्ध कवि, तत्त्वज्ञानी एवं सफल टीकाकार थे। मुनीन्द्र, आचार्य और सूरि जैसी गौरवशाली उपाधियों से इनका महान व्यक्तित्व सम्मानित था। पण्डित आशाधरजी ने गौरव के साथ उन्हें 'ठक्कुर' नाम से सम्मानित किया था।

इन आचार्य की विद्वत्ता, वाग्मिता और प्राञ्जल शैली अप्रतिम है। इनका परिचय किसी भी कृति में प्राप्त नहीं होता है। परन्तु टीकाओं के अन्त में जो संक्षिप्त परिचय दिया है उससे अवगत होता है कि ये बड़े नि:स्पृह आध्यात्मिक आचार्य थे।

आचार्य अमृतचन्द्रसूरि विक्रम की दशवीं शताब्दी के विशिष्ट विद्वान थे।

रचना-परिचय : अमृतचन्द्रसूरि की रचनाओं को दो कोटि में रखा जा सकता है—

(क) मौलिक रचनाएँ :

1. **पुरुषार्थसिद्ध्युपाय :** यह श्रावकाचार सम्बन्धी ग्रन्थ है। इसमें 226 पद्य आर्यावृत्त छन्द में लिखे गये हैं। प्रारम्भ के आठ पद्यों में ग्रन्थ की उत्थानिका दी गयी है। इस उत्थानिका में निश्चय और व्यवहार नय का स्वरूप, कर्मों का कर्त्ता और भोक्ता आत्मा, जीव का स्वभाव एवं पुरुषार्थसिद्ध्युपाय का अर्थ बतलाया है। ग्रन्थ पांच भागों में विभक्त है। इसमें श्रावकधर्म के वर्णन के साथ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र का सुन्दर कथन किया गया है।

2. **तत्त्वार्थसार :** आचार्य उमास्वामी (गृद्धपिच्छाचार्य) के तत्त्वार्थसूत्र के सार को लेकर आचार्य अमृतचन्द्र ने इस स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना की है। इसमें 226 श्लोक हैं। इसमें सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र के साथ-साथ सात तत्त्वों का भी वर्णन है। यह ग्रन्थ 9 अधिकारों में विभक्त है।

(ख) टीकाग्रन्थ :

1. **समयसार-टीका :** आचार्य अमृतचन्द्र की समयसार-टीका 'आत्मख्याति' के नाम से प्रसिद्ध है। आचार्य ने इसे प्रांजल शैली में लिखा है, इन्होंने गाथा के शब्दों का व्याख्यान न करके उसके अभिप्राय को अपनी परिष्कृत गद्यशैली में व्यक्त किया है। टीका के पद्य अलग से भी 'समयसार कलश' नाम से प्रसिद्ध हैं।

2. **प्रवचनसार-टीका :** प्रवचनसार की टीका का नाम तत्त्वप्रदीपिका है। यह टीका भी प्राञ्जलशैली में लिखी गयी है। इस टीका में भी आचार्य की आध्यात्मिक रसिकता, आत्मानुभव, प्रखरविद्वत्ता, वस्तुस्वरूप को तर्कपूर्वक सिद्ध करने की आसाधारण शक्ति, निश्चय-व्यवहार का क्रमबद्ध निरूपण आदि अनेक विशेषताएँ विद्यमान हैं।

3. **पंचास्तिकाय-टीका :** पंचास्तिकाय की 173 गाथाओं पर भी आचार्य अमृतचन्द्र ने टीका लिखी है जो उक्त दोनों ग्रन्थों के समान ही है। आचार्य अमृतचन्द्रसूरि ने पंचास्तिकाय के विषय को अपनी टीका में विस्तृत और स्पष्ट बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। इस टीका का नाम 'तत्त्वदीपिका' है।